॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र

आर्य नीति

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

पाक्षिक

वर्ष : 18 अंक : 24 25 दिसम्बर 2018 मूल्य एक प्रति : 3 रुपये डाक पंजियन संख्या : Jaipur City/264/2018-20 वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद के मार्ग पर चल कर ही देश में क्रांति आ सकती है

-सत्यव्रत सामवेदी

जयपुर 23 दिसम्बर। आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। बलिदान दिवस पर यज्ञ का भी आयोजन किया गया।

सभा को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा के कार्यकारी प्रधान सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि स्वामी जी ने यद्यपि धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक क्षेत्र में अद्वितीय कार्य किया किन्तु उनका सर्वाधिक योगदान मैकाले की शिक्षा पद्धति के विरूद्ध आंदोलन था। मैकाले की शिक्षा पद्धति के विरूद्ध भारतवर्ष के समस्त नेताओं ने आवाज उठाई परन्तु इस शिक्षा पद्धति के उन्मूलन के लिए स्वामी श्रद्धानन्द के अतिरिक्त किसी ने भी रचनात्मक कार्य नहीं किया। मैकाले की शिक्षा पद्धति का उद्देश्य भारत को सदा के लिए पराधीन रखने के लिए भारतवासियों को काला अंग्रेज बनाना था। स्वामी जी ने राष्ट्र के सामने विकल्प के रूप में गुरूकुल कांगडी की स्थापना की जिसमें प्रथम कक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा को हिन्दी का माध्यम बनाया और विज्ञान की शिक्षा भी आर्य भाषा (हिन्दी) में दी जाती थी। सारे उत्तर भारत में शिक्षण संस्थाओं का जाल बिछ गया और हिन्दी माध्यम से शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा प्रवर्तित शिक्षा पद्धति देखने विश्व के समस्त शिक्षा शास्त्री आए। माननीय श्रीनिवास शास्त्री सरीखे नरम से नरम, लाला लाजपत राय सरीखे गरम से गरम, पं. मोतीलाल नेहरू सरीखे उग्रतम राजनीतिज्ञ, पं. मदनमोहन मालवीय सरीखे फूंख-फूंख कर आगे कदम बढ़ाने वाले और गुरूकुल से भी बढ़ी संस्था के संस्थापक सेठ जमनालाल बजाज सरीखे श्रद्धासम्पन्न साधु स्वभाव महानुभाव, भारत कोकिला श्रीमती सरोजनी नायडू सरीखी महिला, शांति निकेतन के संस्थापक विश्वविख्यात श्री रविन्द्रनाथ टैगोर सरीखे महापुरूष और जगद्वन्द्य महात्मा गांधी सरीखे संत आदि सबको ही भिन्न-भिन्न रूचि और भिन्न स्वभाव रखते हुए भी, गुरूकुल ने अपनी ओर आकृषित किया और सबके हृदयों में अपने लिए एक सा स्थान बनाया। ब्रिटिश गवर्नमेन्ट यह समझ गई थी कि यदि स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा प्रवर्तित शिक्षा पद्धति दावानल बन गई तो ब्रिटिश साम्राज्य भारतवर्ष में कुछ दिनों का ही मेहमान है। इसीलिए ब्रिटिश गवर्नमेन्ट ने गुरूकुल कांगडी को ध्वस्त करने में

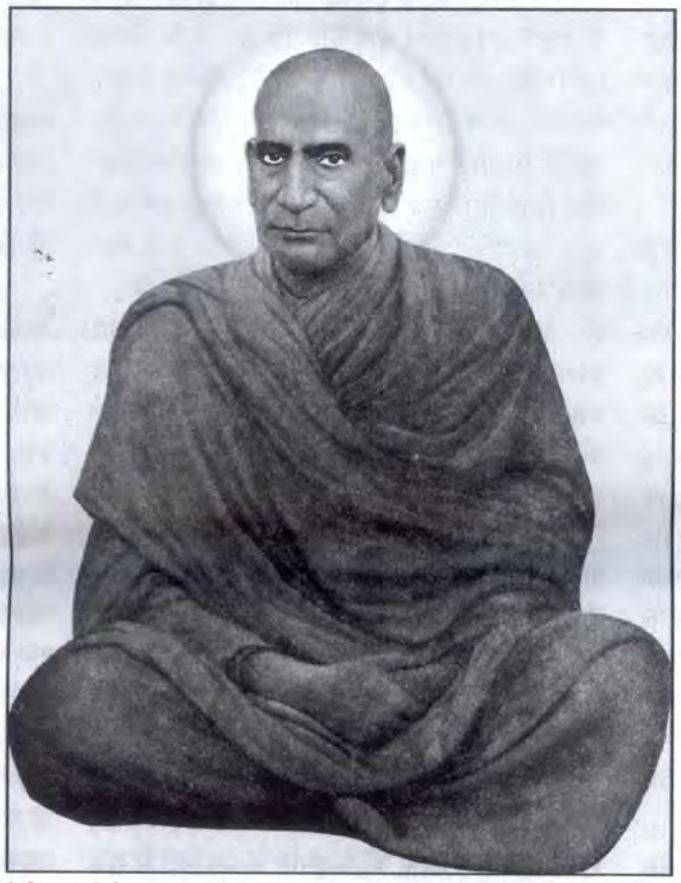

कोई कसर नहीं रखी। गुरूकुल की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री रेमजे मैग्डोनाल्ड सन् 1914 में गुरूकुल की अपनी यात्रा का मनोरंजक वर्णन करते हुए महात्मा मुंशीराम जी के आकर्षक व्यक्तित्व का चित्रण करते हुए उद्गार व्यक्त करते हैं।

'एक महान्, भव्य और शानदार मूर्ति जिसको देखते ही उसके प्रति आदर का भाव पैदा होता है, हमारे आगे हमसे मिलने आती है। आधुनिक चित्रकार ईसा मसीह का चित्र तैयार करने के लिए उसको अपने सामने रख सकता है और मध्यकालीन चित्रकार उसको देखकर सेन पीटर का चित्र तैयार कर सकता है, यद्यपि उस मछिहारे की मूर्ति की अपेक्षा यह मूर्ति अधिक भव्य और प्रभावोत्पादक है।'

रेमजे मैग्डोनाल्ड का डेली क्रोनिकल नामक अंग्रेजी पत्र में गुरूकुल कांगडी के सम्बन्ध में लेख प्रकाशित हुआ- 'सन् 1835 के प्रसिद्ध लेख ने भारत की शिक्षा के सम्बन्ध में सहमति प्रकट करने की बात भारत के शिक्षा के क्षेत्र में यह पहला ही प्रशस्त यत्न किया गया है। उस लेख के परिणामों से सभी भारतवासी असंतुष्ट हैं, किंतु जहां तक मुझको मालूम है गुरूकुल के संस्थापकों के सिवाय किसी ओर ने उस असंतोष को कार्य में परिणत करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में नया परीक्षण नहीं किया।'

लार्ड मैकाले की शिक्षा विषयक जिस सम्मति का श्री रेमजे मैग्डोनाल्ड ने ऊपर उद्धित लेखांश में निर्देश दिया है, उसमें कहा गया था कि अंग्रेजी शिक्षा एक ऐसे वर्ग को उत्पन्न करेगी जो रूधिर और रंग में तो भारतीय होंगे किन्तु जो अपनी रूचि, सम्मति, आचार-व्यवहार और बुद्धि में अंग्रेज होंगे, दूसरे सीधे शब्दों में उसका उद्देश्य भारतीयों को काला अंग्रेज बनाना था। गुरूकुल शिक्षा प्रणाली उस स्वार्थपूर्ण उद्देश्य के बाधक क्रियात्मक उत्तर के रूप में है। वेद शास्त्रों और संस्कृति उच्च शिक्षा के साथ-साथ इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञानादि सब विषयों की हिन्दी भाषा के माध्यम द्वारा उच्च शिक्षा, ब्रह्मचार्य को शिक्षा का आधार बनाना, गुरू शिष्य का घनिष्ठ निकट सम्बन्ध आदि इसकी अपनी विशेषताएं हैं जो अब भी सब शिक्षा संस्थाओं के लिए आदर्श रूप हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द चरित्र पर सर्वाधिक महत्व देते थे और उनकी मान्यता थी कि चरित्र के बिना यदि हमने आजादी भी प्राप्त कर ली तो उसका क्या महत्व, चरित्रहीन राष्ट्र रसातल को जाएगा। उन्होंने जोरदार शब्दों में घोषणा की कि आजादी के आंदोलन को 50 वर्ष तक स्थगित रख दो। पहले देश का चरित्र सुधारो और फिर आजादी लो।

आजादी के 71 वर्ष बाद हम स्वामी जी के इस भविष्यवाणी को अक्षरश: सच सिद्ध होते देख रहे हैं। हमारा देश घोटालों का राष्ट्र हो गया है। इस भ्रष्टाचार की

कालिमा से देश का कोई नेता बचा हुआ नहीं है। लोगों की मान्यता है कि सभी नेता देश को लूट रहे हैं और गरीबी हटाने का नारा तो लगाते हैं परंतु गरीबी बढ़ाते जा रहे हैं। एक आम आदमी का जीना मुश्किल हो गया है।

स्वामी श्रद्धानन्द देश के चरित्र निर्माण के लिए हमेशा चिन्तित रहते थे। 23 जुलाई 1923 को स्वामी जी ने कांग्रेस के प्रधानमंत्री पं. मोतीलाल जी नेहरू के नाम इन शब्दों में त्यागपत्र भेज दिया कि–

'मैंने अमृतसर और मियांवाली जेलों में यह अनुभव किया है कि चरित्र गठन और अस्पृश्ता निवारण द्वारा स्थापित हुए राष्ट्रीय एकता के बिना कांग्रेस अथवा उस सरीखी राजनीतिक संस्थाएं कुछ भी नहीं कर सकेंगी। मैं अपनी सब शक्ति इस कार्य में लगाना चाहता हूँ इसलिए आप मेरा त्यागपत्र स्वीकार करें।'

'मुझे निश्चय हुआ कि अभी चरित्र गठन में बड़ी कमी है, मेरी सम्मति में राष्ट्र के लिए पहली आवश्यकता यह है कि जनता को ब्रह्मचारी बना कर और उसमें सहनशक्ति फूंक कर एक आत्मोन्नत स्वराज्य सेना खड़ी की जाए, तब वैयक्तिक गुलामी की जंजीरे काट कर अत्याचार से मुक्त हो सकेगा। मुझ अल्पशक्ति मनुष्य के लिए यही बड़ा काम है कि ब्रह्मचार्य के उद्धार और दलित जातियों के उत्थान का मार्ग जो अपने को सूझा है, उसका निर्देश आर्य जाति के आगे रखने का यत्न करूं।'

यदि आजादी के बाद हमारे राष्ट्र के नेताओं ने स्वामी श्रद्धानन्द के निर्देशों के अनुसार शिक्षा व्यवस्था की होती तो आज हम अपने देश में जघन्य और वीभत्स बलात्कार के दृश्य नहीं देखते। आजादी के 65 वर्ष बाद निर्भया काण्ड होता है और नाबालिग के नाम पर अपराधी को छोड़ दिया जाता है और इस जघन्य अपराध की शिकार निर्भया की मां विलाप करते हुए कहती है कि अच्छा हुआ निर्भया तुम मर गई वरना आज हम तुमसे नजरें नहीं मिला सकते। प्रतिदिन सैकड़ों निर्भया काण्ड हो रहे हैं और इन वीभत्स काण्डों को रोकने के लिए कानून बनाए जा रहे हैं परन्तु कानून से यह जघन्य अपराध नहीं रूकेंगे, इन अपराधों को रोकने का एकमात्र तरीका यही है कि हम स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा प्रवर्तित शिक्षा पद्धति को अपनाएं और भावी पीढ़ी का चरित्र निर्माण करें।

महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र निर्माण के लिए नारी को राष्ट्र का आधार बनाने का उपदेश दिया था। स्वामी जी के समय तक बेटियों को पढ़ाना अधर्म समझा जाता था। स्वामी श्रद्धानन्द ने महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत बनाने के लिए अपना जीवन समर्पित किया और उत्तर भारत में सर्वप्रथम बालिकाओं के लिए जालंधर में पाठशाला खोली और उसके बाद सारे उत्तर भारत में बालिकाओं के लिए पाठशालाओं का जाल बिछ गया। आज महिला शिक्षा का जो चरमोत्कर्ष देख रहे हैं उसके प्रणेता स्वामी श्रद्धानन्द थे परन्तु कृतघ्न राष्ट्र और कृतघ्न मीडिया उनके इस ऐतिहासिक योगदान पर अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के लिए भी तैयार नहीं है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य दलितोद्धार का किया और दलितोद्धार के लिए उनके द्वारा किये गये प्रयासों का निष्ठापूर्वक पालन नहीं किया इसीलिए आज दलितों और सवर्णों में युद्ध चल रहा है और देश सवर्ण और असवर्ण दो वर्गों में विभाजित हो गया। कांग्रेस ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में दलितोद्धार के कार्य को कांग्रेस के कार्यक्रमों का अभिन्न अंग बनाया था।

1920 में अमृतसर में कांग्रेस के ऐतिहासिक अधिवेशन को स्वागताध्यक्ष के रूप में सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने ओजस्वी भाषण दिया। 'लन्दन नगर में भारत की रिफार्म स्कीम कमेटी के सामने ईसाई मुक्ति फौज के बूथटकर साहब ने कहा था कि भारत के साढ़े छह करोड़ अछूतों को विशेषाधिकार मिलने चाहिए और उसके लिए हेतु दिया था' 'क्योंकि वे भारत में ब्रिटिश गवर्नमेन्ट रूपी जहाज के लंगर हैं'। इन शब्दों पर गहरा विचार कीजिए और सोचिए कि किस प्रकार आपके साढ़े छह करोड़ भाई, आपके जिगर के टुकड़े, जिन्हें आपने काट कर फेंक दिया है, किस प्रकार भारत माता के करोड़ों पुत्र एक विदेशी गवर्नमेन्ट रूपी जहाज के लंगर बन सकते हैं। मैं आप सब बहिनों और भाईयों से एक याचना करूंगा। इस पवित्र जातीय मंदिर में बैठे हुए अपने हृदयों को मातृभूमि के प्रेम जल से शुद्ध करके प्रतिज्ञा करो कि– 'आज से वे साढ़े छह करोड़ हमारे लिए अछूत नहीं रहेंगे बल्कि हमारे बहन और भाई हैं। उनकी पुत्रियां और उनके पुत्र हमारी पाठशालाओं में पढ़ेंगे। उनकी गृहस्थ नर–नारी हमारी सभाओं में सम्मिलित होंगे, हमारे स्वतंत्रता प्राप्ति के युद्ध में वे हमारे कंधे से कंधा जोड़ेंगे और हम सब एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए ही अपने जातीय उद्देश्य को पूरा करेंगे। हे देवियों और सज्जन पुरूषो! मुझे आशीर्वाद दो कि परमेश्वर की कृपा से मेरा यह स्वप्न पूरा हो।

महात्मा गांधी ने इस भाषण के सम्बन्ध में यंग इंडिया में लिखा था– 'स्वागत समिति के अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी का भाषण उच्चता, पवित्रता, गंभीरता और सच्चाई का नमूना था। वक्ता के व्यक्तित्व की छाप उसमें आदि से अंत तक लगी हुई थी। मनुष्य मात्र के प्रति उसमें सद्भावना प्रकट की गई थी।'

रॉलेट एक्ट के विरोध में राष्ट्रीय आंदोलन स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में चला क्योंकि महात्मा गांधी अस्वस्थ हो गए थे। 30 मार्च सन् 1919 में 50 हजार सत्याग्रहियों का नेतृत्व करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने गोरखों की संगीनों के सामने छाती खोलकर निर्भयतापूर्वक कहा– लो मैं खड़ा हूँ, गोली मारो। पं. जवाहर लाल नेहरू ने डिस्कवरी ऑफ इण्डिया में लिखा कि इस दृश्य को देखकर या पढ़कर किसके रोंगटे खड़े नहीं हो जाएंगे।

यद्यपि स्वामी जी हिन्दू संगठन पर बहुत जोर देते थे और उन्होंने लाखों मुसलमानों को शुद्ध किया और उन्हें हिन्दू बनाया परन्तु मुसलमानों के प्रति भी उनका असीम प्रेम था। यही कारण है कि मुसलमानों ने उन्हें जामा मस्जिद में बुलाकर तकरीर करने का आग्रह किया और उन्होंने अपना भाषण वेद मंत्र से प्रारंभ किया। इससे पहले और उसके बाद आज तक भी किसी गैर मुस्लिम को जामा मस्जिद में तकरीर करने के लिए आमंत्रित नहीं किया गया।

23 दिसम्बर 1926 को गुहाटी में आयोजित अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में भाषण देने के लिए महात्मा गांधी एवं अन्य नेताओं ने बहुत आग्रह किया परन्तु वे अस्वस्थता के कारण नहीं जा सके और उन्होंने केवल अपना संदेश भेजा जिसे महात्मा गांधी ने पढ़ कर सुनाया– हिन्दुस्तान का भविष्य हिन्दू–मुस्लिम एकता पर निर्भर है। हिन्दू–मुस्लिम भाई–भाई की तरह देश की आजादी के लिए संघर्ष करें। इस सन्देश को पढ़ने के बाद पांच मिनट में दूसरा सन्देश आया जिसे रूंधे हुए गले से महात्मा गांधी ने पढ़ कर सुनाया– अब्दुल रशीद नामक एक धर्मांध मुसलमान ने गोलियों से मारकर हत्या कर दी थी। वें बीमारी की अवस्था में थे और अब्दुल रशीद ने कहा कि मैं आर्य बनना चाहता हू और इस बारे में आपसे गुफ्तगू करना चाहता हू। स्वामी जी ने कहा कि मैं स्वस्थ हो जाउ फिर वार्ता करेंगे अब्दुल रशीद ने पानी मांगा और उनका सेवक पानी लेने गया। तब उसने स्वामी जी की छाती को गोलियों से भून दिया। अधिवेशन में उपस्थित नेताओं और कार्यकर्ताओं की आंखों से अविलम्ब अश्रु धारा बहने लगी और सारा मंच आंसुओं से गीला हो गया।

आज हमारे देश में वहीं मैकाले की शिक्षा पद्धति की ही वर्चस्व है। हिन्दी को राष्ट्र भाषा का गौरव नही मिला सारा राष्ट्र चरित्रहीन हो गया है। अत: स्वामी श्रद्धानन्द के मार्ग पर चल कर ही देश में क्रांति आ सकती है अन्यथा देश साम्प्रदायिकता की आग में जल कर भस्म हो जायेगा।

इस सम्मेलन में आर्य समाज के मंत्री चक्रकीर्ति सामवेदी एवं कार्यकारी प्रधान बलदेवराज आर्य ने भी उनके सामाजिक व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला और शिक्षा संस्थाओं के छात्राओं ने रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

स्वामी जी : जैसा मैंने उन्हें जाना

- महात्मा गाँधी

जिस बात की संभावना थी, वही हुई। आज से लगभग 6 मास पूर्व स्वामी श्रद्धानंद जी साबरमती में एक-दो दिन ठहरे। बातचीत के प्रसंग में उन्होंने मुझे बताया कि उनके पास प्राय: ऐसे पत्र आते रहते हैं जिनमें उन्हें कत्ल करने की धमकी दी जाती है। ऐसा कौन-सा देश है, जहाँ के सुधारक को अपने लक्ष्य के लिए अपने प्राणों की बाजी नहीं लगानी पड़ी?

स्वामी जी एक सुधारक थे। वह वाक्शूर नहीं, कर्मशूर थे। उनका विश्वास जीवत-जागृत था। उसी के कारण उन्हें यह विपत्ति झेलनी पड़ी। वह वीरता की साक्षात् मूर्ति थे। उन्होंने आपत्ति में भी कभी साहस नहीं खोया। वह एक योद्धा थे और एक योद्धा रोगशैया पर नहीं, अपितु लड़ाई के मैदान में मरना पसन्द करता है।

प्रभू उनके लिए एक शहीद की मृत्यु की कामना करते थे। इसलिए रोगशैया में पड़े रहने पर भी एक हत्यारे के हाथों उनकी मृत्यु हुई। गीता के शब्दों में- ''**सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्।**''

मृत्यु एक वरदान है। परन्तु उस योद्धा के लिए वह दुगुना वरदान है, जो अपने लक्ष्य तथा सत्य के लिए प्राण दे देता है। यह मृत्यु कोई भयंकर दैत्य या विशाच नहीं। वह सबसे अधिक सच्चा मित्र है। वह में कष्टों से मुक्त करता है। हमारी इच्छा न होते हुए भी वह वस्तुतः हमारा सहायक होता है। वह सदा हमें नये अवसर और नई आशाएँ प्रदान करताहै। वह मृत्यु निद्रा के समान मधुर नव-जीवन प्रदान करती है। फिर भी मित्र की मृत्यु पर शोक मनाने का रिवाज चल पड़ा है। परन्तु शहीद की मृत्यु पर कोई शोक नहीं। मुझे तो उनसे तथा उनके स्वजनों से ईर्ष्या होती है क्योंकि यद्यपि स्वामी जी की देह-लीला समाप्त हो गई, तथापि वह जीवित है। वह उस समय की अपेक्षा अब अधिक सच्चे अर्थ में जीवित है, जब वह अपनी विशाल काया के साथ हमारे बीच विचरण किया करते थे। ऐसी शानदार मृत्यु के कारण वह देश जिसमें उन्होंने जन्म लिया और वह राष्ट्र जिससे उनका संबंध था, वस्तुतः बधाई के पात्र हैं। वह सम्पूर्ण जीवन एक वीर की तरह जीये और अन्त में वीर की तरह ही उनकी मृत्यु हुई।

मेरा स्वामी जी से प्रथम परिचय तब हुआ, जब वह महात्मा मुंशीराम थे और वह भी पत्र द्वारा। उस समय वह गुरुकुल काँगड़ी के, जो शिक्षा-क्षेत्र में उनकी एक मौलिक महान् देन है-मुख्याधिष्ठाता थे। वह पश्चिम की प्रचलित पद्धतियों से संतुष्ट नहीं थे। वह अपने देश के बच्चों को वैदिक शिक्षा से अनुप्राणित कर देना चाहते थे। वह उन्हें अंग्रेजी से नहीं, प्रत्युत हिन्दी के माध्यम से शिक्षा देते थे। वह चाहते थे कि उनके शिष्य शिक्षाकाल में सदा ब्रह्मचारी रहें। उन्होंने अपने ब्रह्मचारियों को दक्षिण अफ्रीका में चल रहे सत्याग्रह की सहायतार्थ एकत्र किये जा रहे चन्दे में अपना योगदान करने के लिए प्रेरणा की थी। इनकी इच्छा थी इस कार्य के लिये उनके ब्रह्मचारी मजदूरी करने वाले कुलियों की तरह कठोर परिश्रम करें। और यह उचित ही था, क्योंकि क्या वह सत्याग्रह कुलियों का नहीं था? ब्रह्मचारियों ने समय की माँग को समझा और मेहनत-मजदूरी करके जो धन कमाया, स्वामी जी ने वह मेरे पास भेज दिया। इस विषय में उन्होंने हिन्दी में लिखा हुआ एक पत्र भी मझे भेजा। उस पत्र में उन्होंने मुझे 'मेरे प्यारे भाई' करके संबोधन किया था। इस घटना ने मुझे महात्मा मुंशीराम जी का प्रिय मित्र बना दिया। इससे पूर्व हम दोनों कभी नहीं मिले थे।

श्रीयुत एण्ड्रूज महोदय ने हम दोनों के बीच कड़ी का काम किया। वह इस बात के उत्सुक थे कि जब कभी मैं अपने देश (भारत) में वापस जाऊं तो रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्रिंसिपल रुद्र तथा महात्मा मुंशीराम से-जिन्हें मैं उनकी त्रिमूर्ति कहा करता था, अवश्य परिचय प्राप्त करूँ। स्वामी जी के उक्त पत्र मिलने के बाद से हम दोनों सगे भाई बन गए। सन् 1915 ई. में गुरुकुल कांगड़ी में हम दोनों परस्पर मिले और प्रत्येक मिलन में हम निकट से निकटतर होते गये और एक-दूसरे को अच्छी तरह समझने लगे। उनका प्राचीन भारत, संस्कृत तथा हिन्दी भाषा के प्रति विलक्षण प्रेम था। इसमें सन्देह नहीं कि वह इस असहयोग आंदोलन के जन्म से भी पूर्व असहयोगी थे। वह स्वराज्य प्राप्त करने के लिए अत्यन्त आतुर थे। उन्हें अस्पृश्यता से घृणा थी और वह इन अस्पृश्यों की दशा सुधारने के लिए सदा उत्सुक रहते थे। वह इनकी स्वतंत्रता पर किसी प्रकार का प्रतिबंध सहन नहीं कर सकते थे।

जब देश में रॉलट एक्ट-विरोधी आंदोलन छिड़ा, उस समय वह उसका स्वागत करने वाले अग्रणी पुरुषों में से एक थे। उन्होंने एक अत्यन्त उत्साहवर्धक पत्र मुझे लिखा। परन्तु अमृतसर तथा वीरमगाँव की दुर्घटनाओं के कारण जो मुझे आंदोलन स्थगित करना पड़ा, उससे वह सहमत न हुए।

इसके बाद से हमारे मतभेद बढ़ने शुरू हो हुए। परंतु इस निमित्त से उन्होंने हम दोनों में विद्यमान भ्रातृभाव के मधुर सम्बन्ध में कभी ठेस नहीं पहुँचाई। इस मतभेद के समय मुझे उनकी बच्चों जैसी सरल प्रकृति का परिचय मिला। वह जिसे सत्य समझते थे, उसे खुलेआम कहने में संकोच नहीं करते थे, चाहे उसका परिणाम कुछ भी क्यों न हो।

समय के बीतने के साथ-साथ मैंने पाया कि हम दोनों की प्रकृति में पर्याप्त भेद है, परन्तु यह भिन्नता मेरे लिए स्वामी जी की आत्म की महानता को ही सिद्ध करने वाली हुई। खुलेआम विचार करना कोई अपराध नहीं; यह एक गुण है, सचाई की परख है। स्वामी जी के विचारों में सदा स्पष्टवादिता होती थी।

बारदोली आंदोलन सम्बन्धी निर्णय ने उसका दिल तोड़ दिया था। वह मुझसे निराश हो गए। उन्होंने बलपूर्वक मेरे इस निर्णय का विरोध किया।मेरे पास भेजे कये निजि पत्रों में तो यह विरोध और भी अधिक प्रबल हाता था, परंतु उन्होंने उतने ही बल के साथ उनमें मेरे प्रति स्नेहभाव भी प्रकट किया था। केवल पत्रों में ही अपना स्नेह प्रकट करके उन्हें संतोष नहीं हुआ; वह अवसर पाकर मुझसे अलग मिले, उन्होंने अपनी स्थिति स्पष्ट की और मेरी स्थिति को समझने का प्रयत्न किया। परन्तु मुझसे अलग मिलने का वास्तविक कारण, जैसा कि मुझे प्रतीत होता है, मुझे इस बात का विश्वास दिलाना था कि वह अब भी मुझे अपना छोटा भाई समझकर प्रेम करते हैं। उसमें किसी प्रकार की कमी नहीं आई। मानों ऐसा विश्वास दिलाना वह आवश्यक समझते थे।

कुछ ही मास पूर्व स्वामी जी जब अंतिम बार मुझसे साबरमती आश्रम में मिलने आये, उसका स्मरण कराये बिना मैं उस महान् सुधारक के जीवन-संस्मरण समाप्त नहीं करना चाहता। (उसके आधार पर) मैं अपने मुसलमान मित्रों को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि वह मुसलमानों के विद्वेषी न थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह कई मुसलमानों पर विश्वास नहीं करते थे, परन्तु उनके प्रति किसी प्रकार की दुर्भावना उसके मन में न थी। उनका विचार था कि हिन्दुओं को डराया जाता है, इसलिए वह चाहते थे कि हिंदू बहादुर बने और अपने जीवन एवं सम्मान की रक्षा स्वयं कर सके। उन्होंने मुझे बताया कि इस विषय में मुझे गलत समझा गया है और उनके विरुद्ध कही जाने वाली अनेक बातों में सर्वथा निर्दोष हैं। उन्होंने मुझे बताया कि उनके पास कई धमकी भरे पत्र आये हैं। इसलिए उनके मित्रों ने उन्हें अकेला यात्रा करने में सचेत किया है। परंतु दृढ़ ईश्वर-विश्वासी स्वामी ने कहा- ''**सिवाय परमात्मा के मैं किसका सहारा ढूँढूँ? उनकी इच्छा के विपरीत घास की एक पत्ती भी नष्ट नहीं हो सकती। इसलिए मैं समझता हूँ जब तक वह प्रभु मेरे इस शरीर से कुछ सेवा लेना चाहते हैं, तब तक मेरा कुछ नहीं हो सकता।**''

आश्रमवास के इस काल में उन्होंने आश्रमवासी बालक-बालिकाओं को उपदेश देते हुए बताया कि हिन्दू-धर्म की रक्षा का सर्वोत्तम साधन आंतरिक शुद्धि अर्थात् आत्म-शुद्धि है।

चरित्र-गठन तथा शरीर-निर्माण के लिए उन्होंने ब्रह्मचर्य की आवश्यकता पर सबसे अधिक बल दिया।

नेता कैसा हो?

ओ३म्। त्वं सोम क्रतुभिः
सुक्रतुर्भूस्त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः।
त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा
द्युम्नेभिर्द्युम्नयभवो नृचक्षाः॥

"हे सौम्य-गुणयुक्त (नेता)! आप कर्मवीरों में उत्तम कर्मवीर, बुद्धि-निपुणों में भी श्रेष्ठ-बुद्धि के स्वामी, सब विद्याओं से विभूषित हो, तभी आप महत्त्वपूर्ण होने से वर्षणीय, उत्तम सुखों की वर्षा करने वाले और कीर्तिमानों में प्रशंसित कीर्ति वाले, मनुष्यों के लिए दर्शनीय होते हो। इसलिये इन्हीं गुणों का आप अनुसरण करो।"

संसार नेताओं के पीछे चलता है। एक सत्तात्मक राज्य हो या प्रजातंत्रात्मक, बुतपरस्त मजहब हो वा कब्रपरस्त, मरदुमपरस्त मत हो वा खुदापरस्त, सबमें नेता ही जनता को पीछे चलाते हैं। महाभारत में ठीक कहा है- "**महाजनो येन गताः स पन्थाः**"। किस सड़क पर सर्वसाधारण बेखटके चल देते हैं? जिस पर बनिये महाजन की बहली निर्भय होकर छनछनाती चली जाती है। संसार नेताओं के पीछे चलता है। चाहे कितनी भी स्वतंत्रता की तान तोड़ी जाय, नेता चाहे संसार को डुबा दें और चाहे तार दें, लोग चलेंगे नेताओं के पीछे हो। तब जन साधारण को बार-बार यह समझाने का प्रयत्न करना व्यर्थ है कि व्यक्तियों के पीछे वे न चलें। उनके मन में इस भान को स्थिर करना कठिन है कि कपटी मक्कार नेता उनको डुबा सकता है। जिन्हें लाठी के बिना चलना नहीं आता उन्हें यह समझाने का प्रयत्न व्यर्थ है कि कमजोर लाठी टूटकर घ्घायल भी करा सकती है। ऐसी अवस्था में बुद्धिमान् का काम क्या है? कोई निर्बल लाठी का सहारा ढूँढ़ने वालों के सामने ही न आने दो। परमेश्वर बुद्धिमानों का भी बुद्धिमान् है। इसलिये उसने मनुष्यों के लिए इस कठिनाई का हल भी बतला दिया। जनसाधारण को यह उपदेश देने की अपेक्षा है कि वे किसी व्यक्ति विशेष के पीछे ही न चलें क्योंकि उनमें निर्बलताएँ हो सकती है। परमात्मा का उपदेश नेताओं के लिए है।

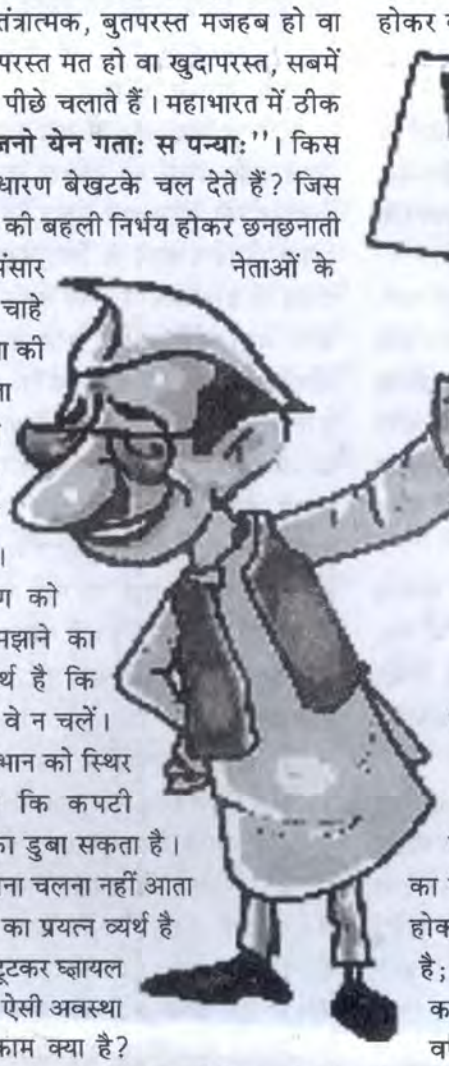

नेता कौन हो सकता है? वेद उत्तर देता है कि जिसमें नीचे लिखे गुण न हों उसे नेता बनने का साहस न करना चाहिये। **सौम्यता**- नेता में सब सौम्य गुणों का निवास होना चाहिए। जिसका स्वभाव सरल नहीं, जो विपत्तियों को प्रसन्नतापूर्वक सहन नहीं कर सकता, जिसे कष्ट उसके उच्चासन से डिगा सकता है, वह नेता होने के योग्य नहीं। आगे उन गुणों की गणना कर दी है। **कर्मवीर**- लोकसंग्रह का कार्य वही कर सकता है जो कर्मवीर हो; अकर्मण्यता के दासों का नेता कुछ भी नहीं कर सकता। नेता का धर्म यह नहीं कि कर्मवीर हो, किन्तु उसका यह भी कर्तव्य है कि कर्महीन पुरुषों को कर्मशील बनावे। तब उसे सब कर्मवीरों से भी आगे चलने वाला होना चाहिए, अर्थात् कर्मवीरों में भी उत्तम कर्मवीर होना चाहिए।

बुद्धिमान- फिर उन कर्मों का प्रयोग बुद्धिपूर्वक होना चाहिए। नेता वह है जो कृष्ण भगवान् के शब्दों में कर्म, अकर्म और विकर्म के भेद को जाने। जैसे मुक्ति अनेक जन्मों के साधनों से सिद्ध होती है, इसी प्रकार नेता भी अपनी आयु के बड़े भाग की बुद्धि को स्वच्छता में लगाने से ही अग्रणी बनता है। **विद्यावान**- इस बुद्धि की स्वच्छता के लिए सर्वविद्याओं के सार का ज्ञान होना भी नेता के लिए आवश्यक है। विद्या और तप से आत्मा की शुद्धि होती है और जब आत्मा शुद्ध होता है तभी मनुष्य परोपकार-वृत्ति में निमग्न होकर कर्मफल की आकांक्षा से मुक्त हो जाता है। ज्ञान और कर्म को जो मिला देते हैं, जिनके कर्तव्य उनके मंतव्यों के अनुकूल हैं और जिनके मंतव्यों का आश्रम सत्यज्ञान है, उनके अन्दर ही निष्काम भाव की उत्पत्ति होती है। नेता ऊपर उठता ही उस समय है जब कर्मफल की आकांक्षा का भाव उसके मनमें उत्पन्न होना बन्द हो जाता है। तब उनके द्वारा जनसाधारण पर सुखों की दृष्टि होती है। जब तक मनुष्य के अंदर सकाम भाव काम करता है, तब तक वह संसार को एक सुख पहुँचाने के पश्चात् ठहर जाता है, वह प्रतीक्षा में है कि जनता उसके परोपकार का आदर करती है वा नहीं, बस इसी स्थान में नेता की मौत है। **परोपकारी**- नेता वही सच्चा है जो परोपकार का काम करके थक न जाय। लोकैषणा से मुक्त होकर ही नेता जनता को अपने पीछे चला सकता है; कोई स्तुति करे, कोई निन्दा करे, उसे सेवा करते रहना चाहिए। वह जनता पर सुखों की वर्षा करता चला जाय, यदि उसके अंदर शक्ति है, और सुखों की वर्षा करने की भी शक्ति नहो तो नेता बनकर आगे कभी नहीं बढ़ना चाहिए।

लोकैषणा मुक्त- यह सत्य है कि नेता को लोकैषणा से मुक्त होना चाहिए, परंतु कीर्ति को वह रोक नहीं सकता। फिर भी कीर्तिमानों से उसकी कीर्ति प्रशंसित होगी, क्योंकि वह कीर्ति के पीछे भागने वाला नहीं। जो लोग कीर्ति के पीछे भागते हैं, कीर्ति उनको त्याग देती है। परन्तु जो कीर्ति की परवाह नहीं करते, कीर्ति उनके पीछे भागती फिरती है। वह प्रशंसित कीर्ति नेता के काम में सहायक होती है, क्योंकि उसकी उज्ज्वल कीर्ति को सुनकर आत्मिक तथा मानसिक भूख और पिपासा से सताये हुए जन उसकी शरण में जाते हैं और अपनी भूख और प्यास को बुझाकर शांतचित्त हो परमात्मा की सृष्टि में सुख का राज्य लाते हैं।

संसार के नेताओं को मन, वचन और कर्म द्वारा इस वेदाज्ञा का पाठ करना चाहिए और यदि उनका जीवन तदनुसार नहीं है तो अपने पिछले किये हुए कर्मों के प्रायश्चित के लिए एकांत में बैठ जाना चाहिए।

संस्मरण

पंजाब में स्त्री शिक्षा के समर्थन में जस्टिस महादेव गोविन्द रानडे

मुझे रानडे की अपरिमित प्रतिभा का एक अन्य अनुभव भी हुआ था। पंजाब में स्त्री-शिक्षा के संबंध में जो प्रस्ताव लाया जा रहा था, आर्य समाज की कल्चर्ड पार्टी उसे कमजोर बनाना चाहती थी। कारण यह था कि उनकी धारणा के अनुसार यदि आर्य कन्या महाविद्यालय की स्थापना होती है तो उससे लड़कों के डी.ए.वी. कॉलेज के वित्तीय साधनों में बाधा आयेगी। श्री रानडे ने मेरे तथा भाई देवराज द्वारा तैयार किये गये प्रस्ताव को राय मूलराज तथा नारायणदास के समक्ष इस अभिप्राय से रखा ताकि वे उसे अपनी धारणाओं के अनुकूल संशोधित कर दें। दो घंटे तक की सरपच्ची के पश्चात् भी जब वे ऐसा नहीं कर पाये, तो श्री रानडे ने एक कागज लिया और उस पर प्रस्ताव के दो वैकल्पिक प्रारूप लिखे। दोनों 'राम' उपाधि-धारियों ने उनमें से एक को स्वीकार कर लिया, और मजा देखिए कि जब यह प्रस्ताव सामाजिक सम्मेलन के खुले अधिवेशन में विचारार्थ आया तो पता चला कि यह तो हम लोगों द्वारा तैयार किये गये उस मूल प्रस्ताव से कहीं अधिक उच्च स्त्री-शिक्षा का हामी है। रानडे विलक्षण मस्तिष्क के थे और मेरी राय में तो वस्तुतः एक देशभक्त राजनीतिज्ञ के रूप में भी वे महान् थे।

सन् 1899 का लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन

हिन्दू समाज की स्थिति मुसलमानों की दृष्टि में

राजनैतिक नेताओं को प्रस्तावों की रूपरेखा बनाने में सहायता देने के लिए श्री रानडे भी वहीं थे। सामाजिक सम्मेलन के कार्यों का निर्देशन भी उन्होंने किया और इस सम्मेलन को प्रथम और अंतिम बार 'राष्ट्रीय' कहकर पुकारा गया। प्रारंभ से ही यह एक हिन्दू सम्मेलन था, परंतु श्री रानडे चाहते थे कि जीवन के सभी क्षेत्रों में हिन्दू और मुसलमान एक साथ चलें। भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन के एकमात्र मुस्लिम प्रतिनिधि बरेली के एक मुफ्ती साहिब थे। अब सम्मेलन आरंभ हुआ। जब एक हिन्दू प्रतिनिधि ने बाल विधवाओं के पुनर्विवाह के पक्ष में प्रस्ताव प्रस्तुत किया तो मैंने उसका अनुमोदन किया। किन्तु एक सनातनी पंडित ने इसका विरोध किया। अब मुफ्ती साहिब ने बोलने की आज्ञा मांगी। सम्मेलन के अध्यक्ष स्वर्गीय राज बैजनाथ ने कहा कि यह प्रस्ताव केवल हिन्दुओं से सम्बन्धित है इसलिए उन्हें बोलने की आवश्यकता नहीं है। इस पर मुफ्ती साहब क्रोधित होकर बोले, "तब इसका नाम 'नैशनल' क्यों रखा है?" अब अध्यक्ष के लिए कुछ भी कहना बाकी नहीं बचा और उन्होंने मुफ्ती साहिब को बोलने की आज्ञा दे दी। मुफ्ती साहब का तर्क था कि हिन्दू शास्त्र पुनर्विवाह की आज्ञा नहीं देते इसलिए इसके लिए आग्रह करना पाप है। इसके पश्चात् जब उन लोगों की शुद्धि का प्रश्न आया जो ईसाई या मुसलमान बन गए हैं, तो मुफ्ती साहब ने आग्रहपूर्वक कहा कि जिस आदमी ने अपने हिन्दू धर्म को त्याग दिया है उसे हिन्दू समाज में पुनः प्रविष्ट कर उसकी पवित्रता को नष्ट करने की आज्ञा नहीं दी जानी चाहिए। उनके इस कथन पर रानडे तथा अन्य हिन्दू नेता तो स्तम्भित-से रह गए, किन्तु मुफ्ती साहब शायद मन-ही-मन मुस्करा रहे थे। अगले वर्ष दिसम्बर में श्री रानडे गंभीर रूप से अस्वस्थ थे, इसलिए वे लाहौर कांग्रेस में नहीं आ सके, परंतु इसके बाद किसी को भी 'सोशल कान्फ्रेन्स' को 'नेशनल सोशल कान्फ्रेन्स' कहने का साहस नहीं हुआ।

अब बस करें नेतागण!

-: डा. चन्द्र त्रिखा :-

चौतरफा शोर, गाली-गलौच, मर्यादाहीन भाषा, बेतुके बयानों की बौछार, चीखते हुए मीडिया एंकर और उतने ही चीखते हुए पार्टियों के प्रवक्ता। इस समय भारतीय राजनीति में प्रदूषण अपने चरम पर है। नवजोत सिद्धू को डॉक्टरों ने चेताया है कि इसी तरह चीखते रहेंगे तो आवाज खो बैठने का खतरा है मगर सिद्धू जी का तो राजनैतिक अस्तित्व ही बेतुके बयानों व बड़बोलेपन पर टिका है। अब क्या करें? गाना वह गा नहीं सकते। भजन उन्हें आता नहीं। मीठे बोलों की आदत ही छूट चुकी है। अब करें भी तो क्या करें?

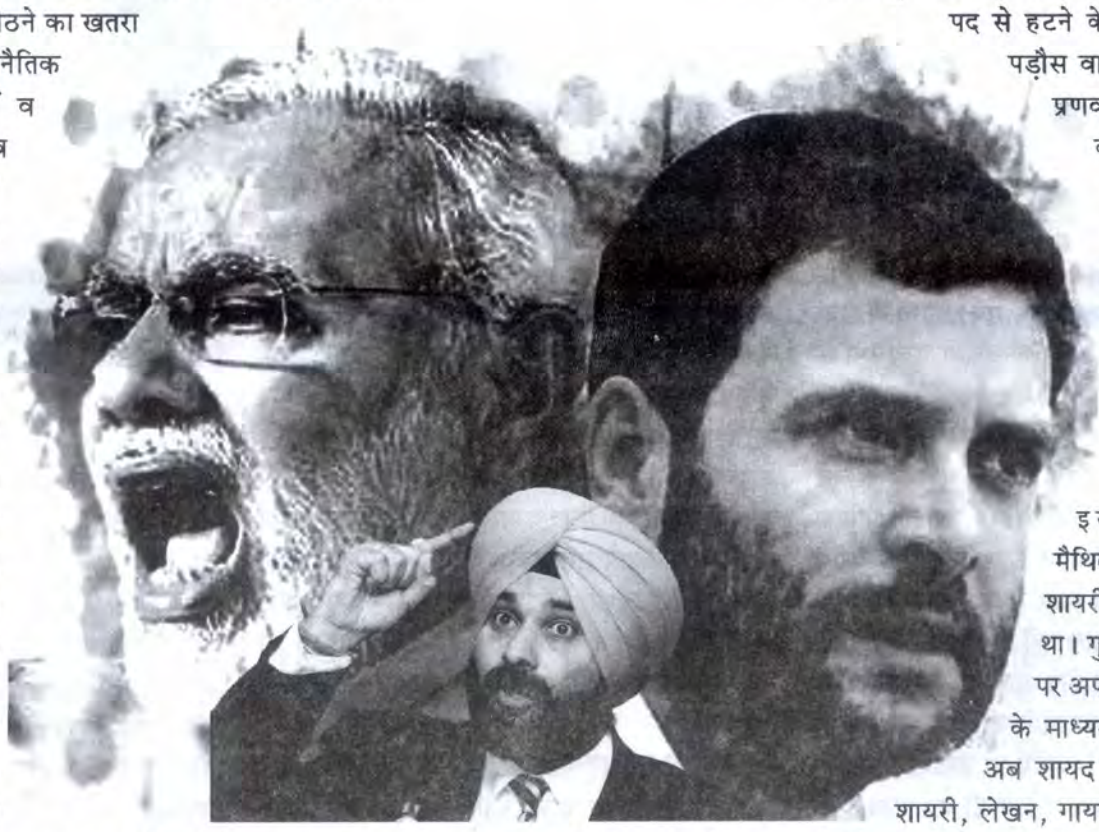

यह संकट सिर्फ सिद्धू का नहीं है। कमोबेश सभी दलों में सिद्धू भरे पडे़ हैं। दरअसल, सिद्धू अब एक 'सियासी कल्चर' का नाम है। खबरों में बने रहना हो तो इस संस्कृति में डूबना, नहाना बेहद जरूरी है। अपने देश में कम बोलने वालों की कतारें अब निरंतर छोटी होती जा रही हैं। शिखर पर हैं पूर्व प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह। वह अब धीरे-धीरे पूरी तरह खामोश रहने लगे हैं। आडवाणी अब सिर्फ हाथ जोड़ने याहाथों की अंगुलियों को परस्पर जोड़े रहने तक सीमित हो गए हैं। मुरली मनोहर जोशी लगभग खामोश हो चुके हैं। येचुरी भी अब कम बोलते हैं। इस चौतरफा शोरोगुल ने भारतीय राजनीति कीसमूची आभा, रौनक छीन ली है। मुझे याद हैं लोहिया, कृपलानी, मधु लिमये, एचवी कामथ, नाथपाई, महावीर त्यागी जिनकी मौजूदगी संसद में गंभीर माहौल की गारंटी देती थी।

वाजपेयी की वक्तृताशैली ने लगभग पांच दशक तक इस देश के राजनीतिज्ञों को बांधे रखा। पंडित नेहरू सरीखे दिग्गज उन पुराने वक्तों में वाजपेयी को भारत का भावी प्रधानमंत्री बताने में हिचकते नहीं थे। विनम्रता की प्रतिमूर्ति लाल बहादुर शास्त्री को चुनाव लड़ने के लिए पार्टी से मात्र दो हजार रुपए व एक जीप मिलती थी। वह उसमें से भी 800 रुपए बचाकर पार्टी-कोष में वापिस जमा करा देते थे।

यह सही है कि वैसी पुरानी संस्कृति अब लौटकर नहीं आने वाली। उन दिनों को बार-बार दोहराना भी बेतुका है मगर हकीकत यह भी है कि राजनीति न तो नौकरी-पेशा है और न ही रोटी कमाने या धन कुबेर बनने का जुगाड़। इसमें प्रवेश के साथ ही अहम्, स्वार्थ ओर अपना घर भरने की मानसिकता को दहलीज के बाहर ही छोड़ना होता है। ऐसा भी नहीं है कि पूरी दलगत राजनीति में सिद्धांतवादी व समर्पित लोग शेष नही बचे लेकिन जो बचे हैं वे निजी कारणों या संस्कारों से बचे हैं। उनके अप्रासंगिक होने या हाशिए पर बुहार दिए जाने का खतरा हमेशा मंडराता रहता है। डा. मनमोहन सिंह ज्यादा नहीं बोल पाते। वैसे भी वह जुझारू किस्म के वक्ता कभी नहीं रहे। उन्हें सम्मान देना पार्टी की मजबूरी है, मगर चुनावों में उन्हें भाषण देने के लिए नहीं बुलाया जाता। वह स्टार-प्रचारक कभी नहीं रहे। यही स्थिति अडवाणी, जोशी, सीताराम येचुरी, एंटनी आदि की हो चली है।

ज्यादा तकलीफदेह बात यह है कि राजनैतिक-शत्रुता व्यक्तिगत-स्तर तक गिर रही है। इस बार विधानसभा-चुनावों के परिणामों के बाद संसद में प्रधानमंत्री और कांग्रेसाध्यक्ष के मध्य राम-राम भी नहीं हुई। दोनों के चेहरे तने हुए थे। ऐसा लगता है राजनीतिज्ञ, सामान्य आदमी की तरह हंसना, मुस्कुराना भी भूल गए हैं। यह वही संसद है जिसमें लतीफों और कहकहों, परस्पर रोचक आरोपों-प्रत्यारोपों में भी मर्यादाओं की दहलीज न लांखने वालों का कोई अभाव नहीं था।

अब तो संसद में तनाव, शोरोगुल व मर्यादाहीनता का आलम यह है कि वेंकैया नायडू जैसे शालीन सभापति को अपनी राज्यसभा में दोनों हाथ जोड़कर विनती करनी पड़ती है कि कम से कम संसद पर हमले के मध्य हुए शहादतों को नमन करने के मध्य तो शोरगुल न हो। विपक्षी नेता प्रधानमंत्री को 'चोर' बताने पर अड़े हैं। हमारी संसदीय तहजीब में इतनी गिरावट गैर-जरूरी है। आरोप कितने भी गंभीर हों, उनके लिए हमारी भाषाओं में ढेरों शब्द हैं। शालीनता का दामन छोड़ने का मतलब यही है कि हमारी सोच व हमारे संस्कारों को जंग लग गया है।

एक संकट यह भी है कि बूढ़े बरगद या तो संसदीय राजनीति में काटे जा चुके हैं या काटे जाने की कगार पर हैं। डा. मनमोहन सिंह, अडवानी, येचुरी, जोशी आदि ऐसी कद्दावर शख्सियतें संसद में मौजूद हैं मगर उनमें भी शायद वह पुराना नैतिक बल नहीं रहा कि वे एक स्वर में सांसदों को तहजीब व मर्यादाओं की सीख देने का प्रयास करें। बार-बार लोहिया, वाजपेयी, कृपलानी याद आते हैं तो इसलिए कि उनके शब्दों में, वाणी में, बर्ताव में गरिमा बनी रहती थी। उनकी मौजूदगी मात्र से एहसास बना रहता था कि ऐसे दिग्गजों की मौजूदगी में मर्यादाएं नहीं टूटेंगी।

संसदीय कडुवाहटों को भूलकर वे लोग सैंट्रल हाल में या फिर सामाजिक जिन्दगी में एक दूसरे से सौहार्द्रपूर्ण संबंध बनाए रखते थे। प्रणव दा को राष्ट्रपति पद से हटने के बाद श्री वाजपेयी के पड़ौस वाला बंगला मिला था तो प्रणव दा ने स्वयं पहलकदमी करते हुए दोनों बंगलों के बीच एक द्वार बनवा लिया था ताकि परस्पर मेलजोल बना रहे। वाजपेयी जी के लिए उनका मनपसंद भोजन कई बार प्रणव दा की रसोई से बनता था।

गालिब, फैज़, इकबाल, दिनकर, मैथिलीशरण गुप्त व दुष्यंत की शायरी का खुलकर प्रयोग होता था। गुप्त जी तो वार्षिक बजट पर अपनी प्रतिक्रिया भी कविता के माध्यम से ही देते थे लेकिन अब शायद अधिकांश सांसदों को शायरी, लेखन, गायन से कोई वास्तव नहीं है हो सकता है अधिकांश ने इनके नाम भी न सुने हों।

इस समूची जुगाली का मकसर यह नहीं है कि बीते दिनों का रोना रोया जाए। मकसद सिर्फ झिंझोड़ने का है, उन कद्दावर बरगदी शख्सियतों को, जो खामोश तमाशा देख रही हैं। मनमोहन सिंह, अडवानी, येचुरी, पवार आदि से अभी पूरी तरह से होशोहवास में हैं। वे पहलकदमी करेंगे तो उकनी बात सुनी जाएगी। उन्हें तटस्थता या हाशिए से बाहर आना ही होगा वरना आने वाली नस्लें उन्हें भी वर्तमान मर्यादाहीनता का मूकदर्शक मानेंगी। यदि उनकी बात नहीं सुनी जाती तो उन सबको सामूहिक रूप से ऐसी घोषणा तो कर ही देनी चाहिए कि यदि मर्यादाओं का उल्लंघन जारी रहा तो वे संसद के बाहर बैठेंगे, भीतर प्रवेश नहीं करेंगे। अंत में दुष्यंत कुमार की एक गजल के कुछ अंश-

तुम्हारे पांवों के नीचे कोई जमीन नहीं
कमाल ये है कि फिर भी तुम्हें यकीन नहीं।
मैं बेपनाह अंधेरों को सुबह कैसे कहूं
मैं इन नजारों का अंधा तमाशबीन नहीं।
तेरी जुबान है झूठी जम्हूरियत की तरह
तू एक जलील-सी गाली से बेहतरीन नहीं।
तुम्हीं से प्यार जताएं तुम्हीं को खा जाएं
अदीब यों तो सियासी हैं पर कमीन नहीं।
तुझे कसम है खुदी को बहुत हलाक न कर
तू इस मशीन का पुरजा है, तू मशीन नहीं।
बहुत मशहूर है आयें जरूर आप यहां
ये मुल्क देखने लायक तो है, हसीन नहीं।
जरा-सा तौर-तरीकों में हेर-फेर करो
तुम्हारे हाथ में कालर हो, आस्तीन नहीं।

पं. प्रकाशवीर शास्त्री एक महान व्यक्तित्व

95वीं जयंती पर विशेष

आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता, संसद के ओजस्वी वक्ता संस्कृत एवं हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान्, स्व. पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी का 30 दिसम्बर को 95वाँ जन्म दिवस है। उनका जन्म 30 दिसम्बर, 1923 को उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद (अब जे.पी.नगर) के नेहरा नामक गांव में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से एम.ए. करने के बाद गुरुकुल वृन्दावन के उपकुलपति नियुक्त किये गये। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय बनारस से शास्त्री की डिग्री हासिल की। देश के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद के देहान्त के बाद 1958 के गुड़गांव उपचुनाव में जीत हासिल कर उन्होंने लोगसभा में निर्दलीय सदस्य के रूप में प्रवेश किया। 1962 में तृतीय लोकसभा के सदस्य बिजनौर, 1967 में हापुड़ गाजियाबाद संसदीय सीट से चुने गये। 1974 में उत्तर प्रदेश से जनसंघ के समर्थन से शास्त्री जी राज्यसभा के सदस्य निर्वाचित हुए।

संसद में धाराप्रवाह हिन्दी में उनके भाषणों को लोग आज भी भूले नहीं हैं। विरोधी दल की भूमिका के बारे में वह कहा करते थे, प्रजातंत्र में विरोधी दलों की भूमिका स्वस्थ निर्णय लेने में बड़ी सहायक रहती है। मात्र विरोध के लिए, विरोध की नीति बाहर से भले ही अच्छी जचें पर उससे राष्ट्र का कोई भला नहीं हो पाता।

शास्त्री जी के अभिन्न मित्र और संसदीय जीवन के साथी श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने शास्त्री जी को अपनी श्रद्धांजलि में कहा 'स्वर्गीय श्री प्रकाशवीर शास्त्री भारतीय संस्कृति के उत्थान तथा हिन्दी एवं संस्कृत के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध थे वे राष्ट्रीय गौरव को क्षितिज की ऊँचाईयों तक ले जाने और राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे। उनमें देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने अपने लम्बे धार्मिक, राजनैतिक तथा सार्वजनिक जीवन में अपनी प्रखर राष्ट्रीय विचारधारा के कारण एक अलग पहचान बना ली थी।

संसद में उनके भाषणों को सभी दलों के नेता बड़े आदर के साथ सुनते थे, श्री अटल जी ने शास्त्री जी के जीवन पर एक पुस्तक का विमोचन करते हुए यह इच्छा व्यक्त की, कि शास्त्री जी के संसदीय भाषणों का एक संकलन निकाला जाये। सन् 2002 में शास्त्री जी के संसदीय भाषणों का संकलन एक पुस्तक 'राष्ट्रीयता के मुख्य स्वर' के रूप में श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी ने लोकार्पण किया।

शास्त्री जी ने कुछ पुस्तकें भी लिखी जैसे 'मेरे सपनों का भारत', 'कश्मीर की वेदी पर', 'धधकता कश्मीर', 'गौहत्या या राष्ट्र हत्या' एवं 'संध्या सरोज'। शास्त्री जी ने 17 सालों तक (1960 से 1977) तक देश को एक सूत्र में पिरोने वाले लौह पुरुष सरदार पटेल की जयन्ती का दिल्ली में भव्य आयोजन करवाया। 1976 में शास्त्री जी को राष्ट्रभाषा हिन्दी और भारतीय भाषाओं के उत्थान में योगदान के लिए मंडित पुरुषोत्तम दास टंडन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नवम्बर, 1977 में जयपुर से वापसी दिल्ली आते हुए श्री प्रकाश वीर शास्त्री जी का हरियाणा के पास रेवाड़ी में ट्रेन दुर्घटना में देहान्त हो गया।

पंडित प्रकाशवीर शास्त्री व्याख्यानमाला-2017 संस्करण

30 दिसम्बर, 2017 को नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आर्य समाज के इस प्रखर नेता की 94वीं जयन्ती समारोह के अवसर पर एक श्रद्धांजलि सभा पर व्याख्यान माला का आयोजन किया गया था।

सभा के उद्घाटन भाषण में पं. प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति न्यास के अध्यक्ष श्री शरद त्यागी जी ने शास्त्री जी के आदर्शों का विस्तार से वर्णन किया। वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने हिन्दी आन्दोलन को याद करते हुए उसमें शास्त्री जी के योगदान को याद किया तथा अपनी पी.एच.डी. हिन्दी में लिखी होने के कारण जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार न किये जाने पर शास्त्री जी ने संसद में इसे उठा कर तीखे शब्दों में इसकी आलोचना की थी। श्री सोमपाल शास्त्री, पूर्व मंत्री भारत सरकार ने शास्त्री जी के साथ उनके आर्य समाज के क्षेत्र में उनके काम करने के अनुभव को याद किया। डॉ. सुभाष कश्यप ने लोक सभा में उनके द्वारा दिये जाने वाले धाराप्रवाह हिन्दी भाषणों को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने अपने शास्त्री जी के साथ बिताये समय की यादे सांझा की और उनकी अभूतपूर्व संगठन शक्ति एवं विरोधी को अपनी मृदु भाषा से निस्तेज कर देने वाली वाणी के कुछ उदाहरण भी साझा किये। इस मौके पर समाज और शिक्षा जगत के विभिन्न विद्वानों ने भी सभा की शोभा बढ़ाई।

पंडित प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति न्यास

पंडित प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति न्यास का ध्येय राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ रखने के लिए प्रयास करना है। यह न्यास सामाजिक क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता को

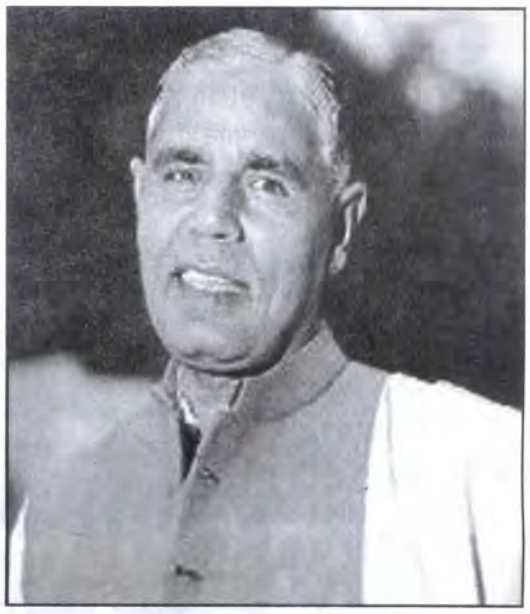

परोक्ष रूप से प्रभावित करने वाले विषयों जैसे शिक्षा की गुणवत्ता सुधार, गरीबी उन्मूलन, जातिवाद समाप्ति के प्रति भी कार्यरत रहेगा।

पंडित प्रकाशवीर शास्त्री राष्ट्रीय एवं सामाजिक मुद्दों जैसे राष्ट्रीय एकता, शिक्षा प्रणाली में सुधार, विदेश नीति, राष्ट्रीय चरित्र निर्माण जैसे विषयों पर संसद के अन्दर एवं बाहर चेतना जगाते रहे। इन्हीं विषयों पर आज के समयानुसार चिन्तन कर सामाजिक एवं राजनीतिक एक राय बनाकर कुछ ठोस कदम उठाने हेतु शास्त्री जी के जन्म दिवस तो एक व्याख्यानमाला के रूप में आयोजित किया जा रहा है। इसी कड़ी में इसके दूसरे संस्करण का आयोजन 30 दिसम्बर, 2018 को दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है।

आर्य नेता पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी के

95वें जयन्ती समारोह के अवसर पर स्मृति व्याख्यान का भव्य आयोजन

आर्य समाज के प्रखर वक्ता एवं सांसद पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी का जयन्ती समारोह 30 दिसम्बर, 2018 को नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में मनाया जायेगा। इस अवसर पर एक स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया जा रहा है जिसका विषय है "राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को चुनौतियाँ"। शास्त्री जी की राष्ट्र भक्ति की भावना से प्रेरित यह आयोजन किया जा रहा है।

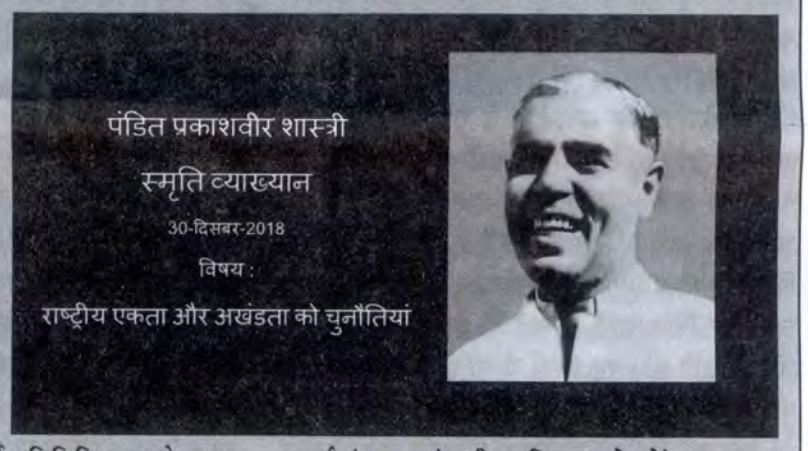

इसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, डॉ. धीरज सिंह प्रधान, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी, डॉ. संजय त्यागी डीन मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज, श्री अनिल त्यागी उपकुलपति इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, श्री आनन्द चौहान जी चेयरमैन एमेटी शिक्षण संस्थान, श्री के. सी. त्यागी पूर्व सांसद, पं. माया प्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा, श्री अनिल आर्य अध्यक्ष केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, श्री प्रदीप त्यागी जी पूर्व इन्कम टैक्स कमिश्नर्स, संविधान विशेषज्ञ श्री सुभाष कश्यप जी एवं साहित्य अकादमी भाषा पुरस्कार विजेता श्री योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण' जी सहित अनेकों गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

कार्यक्रम दोपहर 2 से 4.30 बजे तक ऑडिटोरियम, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, 40 मैक्स मूलर मार्ग, निकट लोधी गार्डन, नई दिल्ली में आयोजित हो रहा है। इसमें पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें। जिन आर्य महानुभावों के पास पं. प्रकाश वीर शास्त्री जी से सम्बन्धित संस्मरण एवं चित्र आदि हों वे pvshastrimemorialtrust@gmail.com इस ईमेल पर भेजने का कष्ट करें।

– शरद त्यागी
मो.:-9896187096

बलिदानी श्रद्धानंद को श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि

हे दिव्य गुणों के रत्नाकर।
समर्पित तुम्में श्रद्धा सुमन॥
हे शुभ्र मति श्रद्धानंद तुम्हें।
भाव सुमनांजलि समर्पित॥

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी के 92वें बलिदान दिवस पर उनके ओजस्वी एवं अद्भुत कृतित्व को अपनी लेखनी द्वारा लेखबद्ध कर श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि के रूप में उनके चरणों में सादर समर्पित करती हूँ और वर मांगती हूँ।

श्रद्धा सुमन ले लो श्रद्धानंद।
मुझ को भी अपने सम कर दो।
कष्टक जीवन को सुमन बनाऊ।
मुझ में भी ऐसी शक्ति भर दो॥

उनके जीवन के दो अद्भुत विपरीत पक्ष थे। जवानी का वह कृष्णपक्ष जो दुर्व्यसनों से रंजित था। पिता के अतिलाड़ प्यार व रईसजादे की संगत ने उन्हें बिगड़ी औलाद बना दिया। मांस-मदिरा का सेवन तथा देर रात तक महफिलों में रहना उनकी दिनचर्या थी। नास्तिकता उनके जीवन की आधार थी जो उन्हें बरबादियों के गलियारों में लगातार धकेल रही थी ऐसे में पिता का पुत्र के प्रति चिंतित होना स्वाभाविक था।

एक दिन जब वह बरेली में थे उनके पिताजी उन्हें महर्षि दयानन्द जी की सभा में ले गये जहाँ उन्हें अच्छा लगा। वह प्रतिदिन महर्षि की सभा में जाते और प्रश्नों द्वारा अपनी शंकाओं का समाधान करते। एक दिन उन्होंने महर्षि के आगे अपना दिल खोल कर रख दिया और कहा आप मेरे ईश्वर सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर तो दे देते हो परंतु मुझे विश्वास नहीं होता कि ईश्वर है। महर्षि ने बड़ी सरलता से उत्तर दिया- तुम्हारा काम प्रश्न करना और मेरा काम उत्तर देना। ईश्वर पर विश्वास ईश्वर कृपा से होता है समय आने पर वह भी हो जाएगा।

महर्षि के जीवन दर्शन ने उनके जीवन को बदल दिया मानो पारसमणि के छूने से लोहा सोना बन गया हो और यही सोना ज्ञान की भट्टी में तप कर कुन्दन हो गया हो। नास्तिक, मांसाहारी तथा शराबी मुंशीराम मात्र आस्तिक ही नहीं बने अपितु जीवन में महात्मा मुंशीराम कलान्तर में स्वामी श्रद्धानंद के नाम से विश्वविख्यात हुए। सत्यार्थ प्रकाश "पंचमहा-यज्ञ विधि" आर्यभिविनय तथा ऋग्वेदादभ्य भूमिका आदि ग्रंथों के अध्ययन के कारण उन्हें एक नया "धर्म-पुरुष" का जीवन प्राप्त हुआ। वह तन-मन-धन से राष्ट्र समाज व आर्य समाज संगठन को पूर्ण अर्पित हो गये। लम्बे समय तक आर्य समाज के "प्रधान" के पद को सुशोभित किया।

स्वामी श्रद्धानंद जी एक निर्भिक, वीर, योद्धा, दानी, त्यागी, शिक्षाविद्, शुद्धि आंदोलन के जनक और स्वामानी राजनेता थे उन्होंने भारतीय संस्कृति, राष्ट्र भाषा हिन्दी तथा शिक्षा के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य किया।

जब लार्ड मैकाले ने अपनी शिक्षा योजना को संसद के समक्ष रखते हुए कहा- 'यदि उसकी योजनानुसार भारत में शिक्षण संस्थाओं को चलाया जाए तो कुछ ही वर्षों में भारत में एक भी मूर्तिपूजक हिन्दु नहीं रहेगा सभी ईसाई बन जाएंगे।' ब्रिटिश संसद ने अनुमति दे दी। ऐसी नाजुक घड़ी में महात्मा हंसराज जी से मिल के डी.ए.वी. स्कूल, कॉलेज व 1901 में वैशाखी के दिन गंगातट से कुछ दूर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर अंग्रेजों की शिक्षा योजना का मुंह तोड़ जवाब दिया। अंग्रेजी सरकार की आर्थिक सहायता के बिना, सब विषयों का ज्ञान स्वदेशी भाषा में देना तथा छात्रों को सरकारी डिग्रियां देकर अंग्रेज अधिकारियों को आश्चर्य चकित कर दिया। शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी अध्याय का सूत्रपात किया आज है किसी राजनेता में ऐसी शक्ति?

92वाँ बलिदान दिवस

एक बार रुड़की के एक अंग्रेज पादरी ने स्वामी जी

स्वामी जी ब्रह्मचारियों के साथ

को पत्र लिख कर गुरुकुल में आकर हिन्दी सीखने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने लिखा मैं अपने धर्म का प्रचार करने के लिए हिन्दी सीखना चाहता हूँ परंतु वादा करता हूँ कि आप के गुरुकुल में अपने धर्म का जरा भी प्रचार नहीं करूंगा। स्वामी जी ने जवाबी पत्र में लिखा 'गुरुकुल में आपका स्वागत है। आप हमारे आदरणीय अतिथि होंगे परंतु आप को यह भी वचन देना होगा कि आप गुरुकुल में ईसाई धर्म को प्रचार भी करेंगे ताकि हमारे छात्रों को ईसा के जीवन के बारे में जानकारियां मिल सके। सच्चा धर्म आपस में वैर नहीं प्रेम करना सिखाता है। यही तो भाव व्यक्ति को महापुरुष बनाता है।'

गुरुकुल में कोई जाति, धर्म, गरीब व अमीर का भेद नहीं था इनकी दृष्टि में सभी उस परमपिता परमात्मा की संतान है। एक दिन गुरुकुल में कुछ मुसलमान आए और उनकी नमाज का समय हो गया उन्होंने पूछा हम नमाज कहाँ पढ़े स्वामी जी ने उत्तर दिया यज्ञशाला से बढ़ कर और पवित्र स्थान कौन सा हो सकता है।

काश आज यह उदार भावना सब मनुष्यों के मन में पैदा हो और मानव-मानव कल्याण की ओर अग्रसर हो। स्वामी जी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने जामा मस्जिद के मीनार से 'ओ३म विश्वानी देव-का मंत्र उच्चारण कर हिन्दी' भाषा में मुसलमानों को एकता का उपदेश दिया था।

हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। इसलिये गुरुकुल से सद धर्म प्रचारक पत्रिका तथा दिल्ली से 'अर्जुन' दैनिक समाचार पत्र निकाला जिससे राष्ट्रीय आंदोलन में काफी सफलता मिली, अमृतसर में अपना अध्यक्षीय भाषण हिन्दी में दिया। आज स्वतंत्र भारत में हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा का दर्जा नमिलना कलंक है और यही राष्ट्र की सभ्यता व संस्कृति के पतन का एकमात्र कारण भी है।

1917 में गुरुकुल के वार्षिक उत्सव के अवसर पर संन्यास लेकर राष्ट्रीय आंदोलन में जुट गये। रोल एक्ट के विरोध में अंग्रेजी सैनिकों के सामने अपनी छाती नंगी कर कहा पहली गोली मेरे सीने पर चलेगी।

केवल उन्होंने अपना जीवन ही नहीं बदला परंतु अपने मूर्ति पूजक व अंधविश्वासी पिता के जीवन में क्रांति ला दी। पुत्र द्वारा घर में छोड़े गये सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास को पंडित जी से सुना क्योंकि वह स्वयं अधरंग रोग के शिकार हो चुके थे। उनकी आंखों में चमक आ गई वह कह उठे 'हम तो आज तक अविद्या में पड़े थे।' जीवन बदल गया, ज्ञान का प्रकाश हुआ। वेद मंत्रों के उच्चारण से प्राण त्यागे और सत्यपथ को प्राप्त हुए।

अपने दादा द्वारा रखे गये अपने राशि नाम 'बृहस्पति' को गुरुकुल के माध्यम से सार्थक किया न जाने वह कितने आचार्य-वृहस्पति के पिता बने।

शुद्धि आंदोलन चलाया, अनगिनत ईसाई व मुसलमान बने हिन्दुओं का शुद्धिकरण कर उन्हें पुन: हिन्दु बना कर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ा।

इसी शुद्धि आंदोलन से चिढ़ कर 23 दिसम्बर 1926 को अब्दुल रशीद नामक युवक ने उनसे मिलने के बहाने उस आततायी ने उन पर गोलियां चला कर इस महान व्यक्तित्व की जीवन लीला समाप्त कर दी।

इनकी मृत्यु पर शोक व्यक्त करने वाली महान विभूतियों के विचारों को लिखा जाए तो अलग से एक पुस्तक तैयार हो जाएगी।

महापुरुषों की जीवन गाथा को कभी भी लेखनीबद्ध नहीं किया जा सकता। उनका जीवन तो धारण करने योग्य होता है फिर भी एक लेखक ने उनके जीवन के सार को कुछ पंक्तियों में सजोने का साहस किया है-

पतन की घड़ियों से गुजरा और फिर इंसान कहलाया।
निकल कर गंदगी से हीरा आर्यों की शान कहलाया॥
अनाथों, विधवाओं की रक्षा के लिये जूझा।
दलितों का उद्धार कर दोनों का भगवान कहलाया॥
शुद्धि और संगठन के जाति के प्रति बलि दे दी।
देवता या शहीद हो अमर बलिदानी कहलाया॥
ओ३म शांति - शांति शांति।
इति

-टंकारा श्री अरुणा सतीजा

पंजीयन संख्या : RAJHIN(RNI)2000/2567
डाक पं. सं. : Jaipur City/264/2018-20

-: शिवनारायण उपाध्याय :-

भारत के ही नहीं प्रत्युत संसार भर के जाने माने गणितज्ञ श्री निवास रामानुजम का जन्म 22 दिसम्बर 1887 ई. को तमिलनाडु के कुम्बाकोनम ग्राम में हुआ था। उनका जन्म एक निर्धन परन्तु प्रसिद्ध परिवार में हुआ था। रामानुजम बाल्यकाल से ही संख्याओं समीकरण और रेखागणितीय समस्याओं से खेला करते थे। सन् 1903 में उन्होंने हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की उसके बाद अंग्रेजी में ध्यान नहीं देने के कारण वे इन्टरमीडिएट परीक्षा में अनुत्तीर्ण रहे। चूंकि उनका परिवार अत्यन्त निर्धन था इसलिए उन्हें अपनी पढ़ाई बंद करनी पड़ी। पढ़ाई बंद करने के बाद उन्हें नौकरी की तलाश में बड़ा परिश्रम करना पड़ा। उनके पिता ने जब देखा कि रामानुजम दिन भर गणित में उलझा रहता है तो वे नाराज हो गए। उन्होंने उन्हें डांटा-फटकारा कि क्यों व्यर्थ इन जोड़ बाकी और समीकरणों में उलझे रहते हो। इनसे किसी भी प्रकार धनार्जन नहीं होगा? फिर यह सोचकर कि कहीं रामानुजम पागल न हो जाये सन् 1909 में उनका विवाह भी कर दिया। रामानुजम के मित्रों ने उनकी कठिन स्थिति को समझा और प्रयत्न करके उन्हें मद्रास बन्दरगाह पर एक लिपिक की नौकरी दिला दी।

सर फ्रांसित स्पिंग जो गणित के विद्वान् भी थे उनके अधिकारी थे। उन्होंने देखा कि रामानुजम अपना कार्य समाप्त कर लेने के बाद भी लिखता-पढ़ता रहता है। रामानुजम से पूछने पर ज्ञात हुआ कि गणित की समस्याओं और समीकरणों पर कार्य करता है।

सर फ्रांसित स्पिंग ने रामानुजम के गणित में किए जाने वाले कार्यों और दिलचस्पी को देखा और वे उससे प्रभावित हुए। सर फ्रांसित स्पिंग ने उनके कुछ कागजों को ब्रिटेन के प्रसिद्ध गणितज्ञ और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रोफेसर जी.एच. हार्डी के पास चुपचाप भेज दिए। प्रो. हार्डी ने रामानुजम के गणित कार्य में दिलचस्पी ली और उन्हें इंग्लैण्ड में बुला भेजा। उन्होंने रामानुजन के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था भी कर दी। सन् 1914 में रामानुजम कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के सम्मानित छात्र बन गए। उनकी कभी धोखा न देने वाली स्मरण शक्ति और गणित की कठिनतम समस्याओं को चुटकियों में हल कर देने वाली कुशाग्र बुद्धि से सभी प्रभावित हुए। परंतु रामानुजम का स्वास्थ्य ऐसा नहीं था कि वे इंग्लैण्ड की जलवायु में 5 वर्ष से अधिक रह सकते। अत्यधिक परिश्रम और अधिक जागरण के फलस्वरूप वे बीमार हो गए। उन्हें फेफड़ों की तपेदिक हो गई।

5 वर्ष के छोटे से काल में भी रामानुजम ने 25 शोध पत्र प्रकाशित किए। सभी शोध पत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण और आश्चर्यजनक स्वभाविक मौलिकता से युक्त थे। रामानुजम और उनके सहयोगियों के कार्यों के आधार पर ही विनोग्रडों ने स्टालिन प्राइज जीतने में सफलता प्राप्त की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार से बड़ी संख्या (कई अंकों वाली) को कैसे चार मुख्य संख्याओं के योग में बदला जा सकता है। प्रसिद्ध वारिग समस्या (किसी भी संख्या को वार्गो घनों अथवा अन्य ऊंचे शक्ति वाले कुछ अंकों में बता देना) गत सौ वर्ष से बिना हल किए पड़ी थी रामानुजम ने उसे हल कर दिया। फलस्वरूप ब्रिटिश रायल सोसायटी ने अपने सब नियमों की अवहेलना करते हुए (रामानुजम तो स्नातक भी नहीं थे) रामानुजम को सन् 1918 में अपनी सदस्यता दे दी। उसी वर्ष उन्हें कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनीटी कॉलेज (पं. जवाहर लाल इसी कॉलेज में पढ़ थे) का भी सदस्य बना दिया।

रामानुजम ने राई मेन के झेटा समीकरण (Zeta Function) मोच थेटा फक्शन (Moch Theta Function) आणविक समीकरणों (Therise of Continued Equation) आदि अनेक गणितीय समस्याओं पर कार्य करके उनके हल प्रस्तुत किए।

रामानुजम ने इसके अतिरिक्त कई खोजें की जिससे उनका नाम संसार भर में प्रसिद्ध हो गया। प्रसिद्ध गणितज्ञ जे.आर. न्यू मेन ने कहा कि रामानुजम का कार्य गणित में सर्वोच्च है। जूलियन हक्सले ने उनका सबसे महान गणित के विद्वान् के रूप में सम्मान किया। प्रो. जी.एच. हार्डी ने लिखा है, मैं अपने आप से कहूंगा कि जब मैं निराश हुआ और अपने आपको दिखावटी और थकावट उत्पन्न करने वाले लोगों को सुनने के दबाव में पाया तब भी मैंने लिटिलवुड और रामानुजम के बल पर कहा कि ठीक है मैंने वे समस्याएं हल कर दी तुम नहीं कर सकते थे। रामानुजम के बहुत अस्वस्थ होने पर उन्हें इस आशासे सन् 1919 में भारत भेजा कि वहां का जलवायु उन्हें स्वस्थ कर देगा परंतु 26 अप्रेल 1920 को उनकी मृत्यु हो गई।

उनकी मृत्यु के बाद उनकी विधवा पत्नी को कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने कुछ पेन्शन स्वीकार की परन्तु भारत सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया। स्वतंत्र भारत की लोक सभा में भी यह प्रश्न उठा तब उसे नाम मात्र की पेन्शन स्वीकार की गई।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
काकोरी कांड के अमर शहीद
अशफाक उल्ला खां
हसरत वारसी की गजल

उरुजे कामयाबी पर कभी हिन्दोस्तां होगा।
रिहा सय्याद के हाथों से अपना आशियां होगा॥
चखाएँगे मजा बर्बादिए गुलशन को।
बहार आ जाएगी उस दम जब अपना बागवां होगा॥
यह आये दिन की छेड़ अच्छी नहीं ऐ खंजरे कातिल।
बता कब फैसला उनके हमारे दरमियां होगा॥
जुदा मत हो मेरे पहलू से ए दर्दे वतन हरगिज।
न जाने बाद मुरदन मैं कहां तू कहां होगा॥
वतन की आबरु का पास देखें कौन करता है।
सुना है आज मकतल में हमारा इम्तिहा होगा॥
शहीदों के मजारों पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा॥
कभी वह दिन भी आयेगा जब अपना राज देखेंगे।
जब अपनी ही जमीं होगी, जब अपना आसमां होगा॥
ख्याल आता है जिस दम दिल में चुभता है सिनाँ होकर।
रहे क्यों कब्जाए अगियार में हिन्दोस्तां होकर॥
शहीदाने वतन का खून एक दिन रंग लायेगा।
चमन में फूट निकलेगा वह वरगे अगवाँ होकर॥

अशफाक उल्ला खाँ
द्वारा जेल की काल कोठरी में रचयित

॥ ओ३म् ॥
वेद प्रचार, विश्व शान्ति, राष्ट्रोत्थान एवं सम्पूर्ण क्रांति के लिये समर्पित पाक्षिक पत्र
आर्य नीति

सत्यव्रत सामवेदी,सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक 5च-13, जवाहर नगर, जयपुर के लिये हरिहर प्रिन्टर्स, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित।

सम्पादक मण्डल
चक्रकीर्ति सामवेदी, घनश्यामधर त्रिपाठी
फोन नं. : 0141-2621859 का. : 2624951
M :9829052697, e-mail: Vishwamaryam@gmail.com
9929804883 Vishwamaryam@rediffmail.com
आर्य समाज, विद्या समिति एवं शिक्षा समिति, आदर्श नगर, जयपुर के सौजन्य से प्रकाशित

प्रेषक : सत्यव्रत सामवेदी, सम्पादक, आर्य नीति
आर्य समाज, राजापार्क, जयपुर - 4

टिकिट

पंजियन संख्या
RAJHIN(RNI)/2000/2567
डाक पंजीयन संख्या
Jaipur City/264/2018-20

प्रेषित : ....

-:: डाक वापसी का पता ::-
आर्य नीति, आर्य समाज, आदर्श नगर, जयपुर-4, राज.